



DR. MODADUGU VIJAY GUPTA

Dr. Modadugu Vijay Gupta has been involved for over 60 years in improving the food and nutritional security of resource-poor through aquaculture in Asia, Pacific and Africa. He is credited with being architect of Blue Revolution in Asia and across the globe. His special focus has been for empowerment of rural women and landless in developing countries through simple, low-cost fish farming technologies he has developed.

2. Born on 17th August 1939, Dr. Gupta received Bachelor of Science degree from Andhra University, Master of Science degree from Banaras Hindu University and Doctor of Philosophy (Ph.D) degree from University of Calcutta. His ground breaking research in early 1970s led to doubling production in aquaculture and laid the foundation for “Blue Revolution

3. Dr. Gupta worked for over 30 years as Fisheries Expert/Advisor with various international organisations - the United Nations Economic and Social Commission for Asia-Pacific (UN-ESCAP), Food and Agriculture Organisation of United Nations (FAC) of UN) and the World Fish Center (CGIAR), and oversaw implementation of programs in some 20 countries of Asia, Africa and the Pacific. In all these countries, his work resulted in increasing incomes and food security of millions of rural poor and led to empowerment of rural women.

4. Dr. Gupta has been Consultant to many international organisations such as FAO of UN; DANIDA; AusAID; USAID; the World Bank; the Asian Development Bank; Commonwealth Secretariat, London; Agriculture Research Center of Netherlands; Mekong River Commission; WorldFish Center (CGIAR), Malaysia, etc. He has been a Member, High Level Panel of Experts of Committee on World Food Security of United Nations, former Technical Advisor to Government of Andhra Pradesh and to Government of Telangana.

5. In recognition of his exceptional achievements in enriching the diets and lives of the most impoverished families and contributing to food and nutritional security, Dr. Gupta has received many awards and honours, most prominent among them being: the World Food Prize in 2005, considered as Nobel Prize in Food and Agriculture. The Sunhak Peace Prize Foundation, South Korea conferred on him the inaugural Sunhak Peace Prize in 2015, considered as alternate to Nobel Peace Prize for addressing food crisis facing human kind and giving the poor a sense of hope. He received Trillion Million Lifetime Achievement Award from the International Union for Food Science and Technology (IUFoST); Nutra Life Time Achievement Award from Nutraceutical and Health Food Industries; Gold Medal from the Asian Fisheries Society, Malaysia; Honorary Life Member Award from the World Aquaculture Society, USA; Eminent Agriculture Scientist Award from the Government of Andhra Pradesh; Outstanding Team Research Award from the Indian Council of Agricultural Research (ICAR), etc. He received Honorary Doctor of Science (D.Sc) degrees from G.B. Pant University of Agriculture and Technology, and Central Institute for Fisheries Education.



डॉ. मोदादुगु विजय गुप्ता

डॉ. मोदादुगु विजय गुप्ता 60 से अधिक वर्षों से एशिया, प्रशांत क्षेत्र और अफ्रीका में जलीय कृषि के माध्यम से संसाधनहीन लोगों के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा में सुधार हेतु सक्रिय हैं। उन्हें एशिया और पूरे विश्व में नीली क्रांति का सूत्रधार होने का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने विकासशील देशों में सरल, कम लागत वाली मछली पालन तकनीकों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं और भूमिहीनों के सशक्तिकरण पर विशेष रूप से ध्यान दिया है।

2. 17 अगस्त 1939 को जन्मे, डॉ. गुप्ता ने आंध्र विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातकोत्तर और कलकत्ता विश्वविद्यालय से दर्शन विहारद (पीएचडी) की उपाधि प्राप्त की। 1970 के दशक के प्रारम्भ में उनके अभूतपूर्व अनुसंधान से जलीय कृषि में उत्पादन दोगुना हुआ और "नीली क्रांति" की नींव पड़ी।

3. डॉ. गुप्ता ने 30 से अधिक वर्षों तक विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों यथा एशिया-प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग (यूएन-ईएससीएपी), संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएसी) और वर्ल्ड फिश सेंटर (सीजीआईएआर) में मत्स्य विशेषज्ञ/सलाहकार के रूप में काम किया, तथा एशिया, अफ्रीका और प्रशांत क्षेत्र के 20 देशों में कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का पर्यवेक्षण किया। इन सभी देशों में, उनके काम के परिणामस्वरूप लाखों ग्रामीण गरीबों की आय और खाद्य सुरक्षा में वृद्धि हुई और ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ।

4. डॉ. गुप्ता ने कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों में परामर्शदाता के रूप में अपना योगदान दिया है, यथा संयुक्त राष्ट्र संघ का एफएओ; डीएनआईडी; एयूएसआईडी; यूएसआईडी; विश्व बैंक; एशियाई विकास बैंक; राष्ट्रमंडल सचिवालय, लंदन; एग्रीकल्चर रिसर्च सेंटर ऑफ नीदरलैंड; मेकांग नदी आयोग; वर्ल्डफिश सेंटर (सीजीआईएआर), मलेशिया, आदि। वह संयुक्त राष्ट्र की विश्व खाद्य सुरक्षा समिति के उच्च स्तरीय विशेषज्ञ के पैनल के सदस्य रहे हैं तथा उन्होंने आंध्र प्रदेश सरकार और तेलंगाना सरकार के पूर्व तकनीकी सलाहकार के रूप में भी कार्य किया है।

5. सबसे गरीब परिवारों के आहार और जीवन को समृद्ध बनाने तथा खाद्य और पोषण सुरक्षा में योगदान देने में उनकी असाधारण उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हुए, डॉ. गुप्ता को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, उनमें सबसे प्रमुख हैं: 2005 में विश्व खाद्य पुरस्कार, जिसे खाद्य और कृषि क्षेत्र का नोबेल पुरस्कार कहा जाता है। मानव जाति के सामने खाद्य संकट को दूर करने और गरीबों की आशा जगाने के लिए, सनहाक शांति पुरस्कार फाउंडेशन, दक्षिण कोरिया ने उन्हें 2015 में पहला सनहाक शांति पुरस्कार प्रदान किया, जिसे नोबेल शांति पुरस्कार के समान माना जाता है। उन्हें इंटरनेशनल यूनियन फॉर फूड साइंस एंड टेक्नोलॉजी (आईयूएफओएसटी) के ट्रिलियन मिलियन लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड; न्यूट्रास्युटिकल और हेल्थ फूड इंडस्ट्रीज द्वारा न्यूट्रा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड; एशियन फिशरीज सोसाइटी, मलेशिया, के स्वर्ण पदक; वर्ल्ड एक्वाकल्चर सोसाइटी, यूएसए के आजीवन मानद सदस्य पुरस्कार; आंध्र प्रदेश सरकार की ओर से प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक पुरस्कार; भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) से उत्कृष्ट टीम अनुसंधान पुरस्कार, आदि से सम्मानित किया गया है। उन्हें जी.बी. पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय और केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान द्वारा मानद डॉक्टर ऑफ साइंस (डी.एससी) की उपाधि प्राप्त हुई है।